Indian J. Soc. & Pol. 10 (02):47-52:2023 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2023 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत में सांप्रदायिकता : उद्‌भव एवं विकास

(एक विवेचनात्मक अध्ययन)

दीपक राणा[1]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मेंरठ कॉलिज, मेंरठ, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

भारत जैसे पंथनिरपेक्ष राष्ट्र में सांप्रदायिकता रुपी राक्षस ने आज निश्चित रुप से समाज में विष घोलने का कार्य किया है। सांप्रदायिकता एक ऐसी परिघटना है जो समाज के हर वर्ग को प्रभावित करती है। ब्रिटिश शासन की यह देन आज हमारी राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने का कार्य कर रही है। सांप्रदायिकता वर्ग–संघर्ष की विकृत अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है। यह कुछ व्यक्तियों, संगठनों व दलों द्वारा संपूर्ण सपदाय को एक झंडे तल कर अपने स्वार्थ को पूरा करने का माध्यम बनता जा रहा है। सांप्रदायिकता की समस्या आज उन प्रमुख ज्वलंत समस्याओं में से एक है जिनका समाधान होना आज परम आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत में सांप्रदायिकता के विकास क्रम तथा सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारको पर विवेचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला जायेगा।

KEYWORDS: *सांप्रदायिकता , मुगल काल, ब्रिटिश काल, स्वतंत्र भारत*

विषय प्रवेश

भारत एक लोकतांत्रिक और विकासशील राष्ट्र है और आज प्रगति एवं उन्नति के पथ पर निरन्तर अग्रसर है। एक लोकतांत्रिक और लोक कल्याणकारी राष्ट्र होने के नाते राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के मध्य परस्पर प्रेम और सौहार्द का वातारण निर्मित करना उसकी प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है लेकिन आधुनिक भारत में प्रेम, सौहार्द और लोगों के मध्य एकता की स्थापना में सांप्रदायिकता रुपी चुनौती एक बाधा के रुप में सामने है। आज भारत की जनता के सम्मुख सांप्रदायिकता से निकट अन्य कोई समस्या नहीं है। भारत में सांप्रदायिकता की समस्या ने न केवल हमारे धर्म निरप्रेक्ष तथा संघीय ढांचे के स्थायित्व एवं कार्यप्रणाली को, वरन् हमारे राष्ट्रीय जीवन की शासन पद्धति के मूल–भूत सिद्धांतों को भी प्रभावित किया है। भारत सदियों से इस समस्या से जुझता आ रहा है। प्राचीन काल से ही लोग धर्म और जात–पात के आधार पर लड़ते आ रहे और आज भी ये सिलसिला यूँ ही जारी है।

कुछ विद्वान सांप्रदायिकता के प्रदुर्भाव को मध्यकालीन भारत में मानते है तो कुछ विद्वानों के अनुसार सांप्रदायिता अंग्रेजी शासन की देन है। अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर भारतीय जनता को लड़ाया उन्होनें बांटो और शासन करो की नीति को अपनाया और सर्वप्रथम धर्म के आधार पर दो समुदाय के मध्य परस्पर, ईर्ष्या, द्वेष और सांप्रदायिकता की भावना का विकास किया। आज भारतीय समाज में सांप्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता आदि अनेका रुपों में फल फूल रही है। सांप्रदयिकता एक आधुनिक विचारधारा है इस विचारधारा के अनुसार किसी एक धर्म को मानने वाले अनुयायियों के सामाजिक हित अन्य किसी दूसरे धर्म के अनुयायियों से भिन्न होते है ऐसी अवस्था से दो भिन्न–भिन्न धर्मों के अनुयायी एक साथ नहीं रह सकते हैं और उनके मध्य टकराव सुनिश्चित है। सांप्रदायिकता ऐसी सर्कीण विचार धारा है, जो लोगों के सोचने और समझने की शक्ति को क्षीण कर देती है। यह एक ऐसी चितंन धारा है, जो समाज के सामने अनेक रूपो में सामने आती है। कभी वह समाजवाद की बात करती है तो कभी धार्मिक राष्ट्रवाद की लेकिन उसके खोकले दावे हमेंशा समाज को बांटने का ही काम करते है। अगर हम भारत के विभाजन की बात करें तो उसका आधार भी परस्पर दो धर्मों के मध्य सांप्रदायिकता की भावना ही थी। आज जिस सांप्रदायिकता के कारण वर्तमान की जड़ें खोकली होती जा रही है वहीं कुछ राजनीतिक तथा सामाजिक संगठन अपने नीजि स्वार्थों के कारण उसे नष्ट करने की बजाए उसे बढ़ावा दे रहे है। आज ये संगठन समाज को धर्म के नाम पर बांटने का कार्य कर रहे है। जहाँ बहुत से लोग समाज को बांटने का कार्य कर रहे है वही कुछ ऐसे भी लोग है जो इस सामाजिक बुराई के विरूद्ध है तथा वो लोगों को जागरूक कर उनके मध्य प्रेम और सौहार्द की भावना का निर्माण करने का कार्य कर रहे है। यह प्रशंसनीय है क्योंकि सांप्रदायिकता रुपी अवधारणा न ही मानव जाति और ना ही देश हित में किसी प्रकार से उपयोगी है।

भारत में सांप्रदायिकता का विकास

भारत में सांप्रदायिकता के विकास के संबंध में अनेको मत एवं धारणाऐं प्रचलित है। कुछ विद्वानों के अनुसार भारत में सांप्रदायिकता की समस्या मुगल शासन की देन है तो कुछ विद्वानों के मतानुसार सांप्रदायिकता का विकास आधुनिक काल में हुआ इनके अनुसार सांप्रदायिकता ब्रिटिश शासन के साथ ही भारत में आयी। सांप्रदायिकता के विकास के इन विभिन्न दृष्टिकोणों को बेहतर ढंग से समझने के लिए इसके विकास के क्रम को तीन भागों क्रमशः

1: Corresponding Author

मुगलकाल, ब्रिटिशकाल तथा स्वतंत्र भारत में विभाजित कर विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन किया गया है।

मुगल काल

निश्चित रुप से सांप्रदायिकता वर्तमान समय की सर्वाधिक ज्वलंत समस्याओं में से एक है। सांप्रदायिकता के विकास एवं इसके इतिहास को वर्तमान समय में मुगल काल से जोड़कर देखा जाता है। मुगलकाल जिसे मध्यकाल भी कहा जाता है, उसमें सांप्रदायिकता के विकास एवं उद्भव के विषय में विभिन्न इतिहासकारो के भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण है। निश्चित रुप से सांप्रदायिकता हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के इर्द–गिर्द ही केन्द्रित रहती है। मुगल काल जिसकी स्थापना सन् 1526 ई0 में प्रथम मुगल शासक बाबर के द्वारा की गई थी, उस वक्त इस्लाम शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी लेकिन उस वक्त के मुस्लिम शासकों एवं हिन्दू शासकों के मध्य जो संघर्ष था, वो जातिय या धार्मिक आधार पर केन्द्रित न होकर केवल सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष था।

सांप्रदायिकता का विकास मुख्यतः इसके भ्रामक इतिहास लेखन का भी परिणाम रहा है। भारतीय इतिहास को कुछ पाश्चात्य लेखको के द्वारा तोड़–मरोड़ कर इस प्रकार प्रस्तुत किया गया, जिससे सांप्रदायिकता की अवधारणा को लोगों ने इतिहास से जोड़कर देखा। जेम्स मिल जो कि पाश्चात्य विद्वानों में से एक है, उन्होंने भारतीय इतिहास को सर्वप्रथम तीन भागों हिन्दू सभ्यता, मुस्लिम सभ्यता, एवं ब्रिटिश सभ्यता में बाँटा। उनके अनुसार हिन्दू सभ्यता उस वक्त सर्वाधिक पिछड़ी हुयी एवं राष्ट्र विरोधी थी, जबकि मुस्लिम सभ्यता को उन्होंने हिन्दू सभ्यता के विपरीत बहुत अधिक विकासशील एवं बेहतर सभ्यता की संज्ञा प्रदान की। पाश्चात्य लेखकों के द्वारा इस प्रकार के लेखन का मुख्य आधार हिन्दू एवं मुस्लमानों के मध्य परस्पर वैमन्य उत्पन्न कर ब्रिटिश हकुमत को सुदृढ़ बनाये रखना था। पाश्चात्य लेखको के द्वारा जो भ्रामक इतिहास लेखन किया गया उसका दंश भारतीय समाज आज भी झेल रहा है।

श्री प्यारे लाल जी के अनुसार ''अंग्रेजो के आगमन से पूर्व भी भारत में विभिन्न संप्रदायों के मध्य धार्मिक मतभेद और परस्पर आपसी झगड़े होते रहते थे किंतु समुचा चित्र जो प्रथम दृष्टाय सामने आता था, वह विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के संगम का समन्वय था। मुस्लिम शासकों के गैर–मुस्लिम सेनापति और सलाहाकार होते थे और उसी तरह हिन्दू राजाओं के मुस्लमान मंत्री, सेनापति और सलाहाकार होते थे।'' लेकिन कुछ संर्कीण विचारधारा के पाश्चात्य इतिहासकारों के द्वारा अंग्रेजी शासन को और अधिक बलवती करने के लिए हिंदुओं और मुस्लमानों का गलत चित्रण प्रस्तुत किया गया।

मुगल काल में प्रत्येक शासक चाहे वो हिंदू हो या मुस्लिम अपने राजनीतिक हितों के स्वार्थ से प्रेरित थे। उनका एकमात्र उद्देश्य अपने राज्य का विस्तार करना था। धार्मिक आधार पर उस वक्त संघर्ष प्राय कम ही हुये। ऐसा भी देखने को आया है, जब सत्ता प्राप्ति हेतु परस्पर हिंदू शासकों के मध्य आपस में संघर्ष हुआ और दूसरी ओर मुस्लिम शासक के द्वारा सत्ता की लालसा हेतु दूसरे मुस्लिम शासक पर आक्रमण किया गया तथा युद्ध में हिंदू शासकों के द्वारा मुस्लिम शासकों का और मुस्लिम शासकों के द्वारा हिंदू शासकों का समर्थन किया गया।

उदाहरण स्वरुप जब प्रथम मुगल शासक बाबर द्वारा इब्राहिम लोदी के विरुद्ध आक्रमण किया गया, तब हिंदू शासक राणा सांगा के द्वारा बाबर का साथ दिया गया। उसी प्रकार एक अन्य उदाहारणार्थ जब मुगल शासक अकबर के द्वारा महाराणा प्रताप के विरुद्ध हल्दीघाटी का युद्ध हुआ तो उस वक्त हिन्दू शासक मान सिंह ने अकबर का सहयोग किया और दूसरी ओर हकीम खाँ सूरी जो एक अफगान योद्धा था वह महाराणा प्रताप की तरफ से युद्ध लड़ा हालांकि सांप्रदायिक विचारधारा के लोग इन ऐतिहासिक तथ्यों को नजर अंदाज करते है।

मुगल शासक अकबर एवं राजपूत शासक महाराणा प्रताप के मध्य जो परस्पर संघर्ष हुआ वो वास्तव में मेंवाड़ राज्य के लिए संघर्ष था ना कि मुगलों और राजपूतों का संघर्ष। अगर उस वक्त मेंवाड़ का राजा कोई मुस्लिम शासक भी होता तब भी अकबर और उसके मध्य युद्ध होता क्योंकि वह संघर्ष पूर्णतः सत्ता प्राप्ति तक ही केन्द्रित था।

भ्रामक इतिहास लेखन के द्वारा एवं अनेकों मिथकों के आधार पर लोगों की भावनाओं से खेला गया तथा लोगों को परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध कर सांप्रदायिकता की भावना को पनपने दिया गया। सांप्रदायिकता मूलतः एक आधुनिक विचारधारा है। हाँ यह पूर्णतः सत्य है कि इस्लाम शासन के आगमन के उपरांत तात्कालीन समाज हिंदू एवं मुस्लिम समाज में विभक्त हो गया था लेकिन ऐसा नहीं हुआ कि दोनों समाज के मध्य धार्मिक आधार पर संघर्ष हुये हो।

ब्रिटिश काल

मुगल काल का अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्षतः हम पाते है, कि बेशक समाज उस वक्त विभिन्न धर्मो एवं संप्रदायों में विभक्त था, लेकिन धर्म के आधार पर सांप्रदायिकता का स्वरुप देखने को नहीं आया। भारत में सांप्रदायिकता का आंरभ ही ब्रिटिश काल के आगमन से माना जाता है। सन् 1600 ई0 में कुछ मुट्ठी भर अंग्रेज भारत में व्यापार करने हेतु आये और उन्होंने ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना की। अंग्रेजो की विस्तारवादी नीति और कारगुजारी का ही परिणाम था, कि सन् 1857 में भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ। यह संग्राम तात्कालिन मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में लड़ा गया जिसमें हिंदुओं और मुस्लिमों ने कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजो के विरुद्ध युद्ध लड़ा।

सन् 1857 के प्रथम स्वंतत्रता संग्राम में जब हिंदुओं और मुस्लमानों को परस्पर एक साथ मिलकर अपने विरुद्ध लड़ता देखा तो ब्रिटिश हकुमत को यह एहसास हो गया कि अगर यह भारतीय

समाज यूँ ही एकजुट रहा तो हम ज्यादा समय तक यहाँ अपना नियंत्रण नहीं रख पायेगे। अतः ब्रिटिश हकुमत के द्वारा हिंदुओं और मुस्लमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न कर उन्हें आपस में लड़ाने की नीतियों पर कार्य किया जाने लगा। अंग्रेजों ने फूट–डालो राज करो नीति के तहत भारत में सांप्रदायिकता के वृक्ष का बीजारोपण किया जो समय के साथ–साथ पलवित–पुष्पित होता गया। अंग्रेज यह भंलि–भांति जानते थे, कि संगठित एवं एकजुट भारत को अगर जल्द ही विंखडित नहीं किया गया तो यह ब्रिटिश शासन के हित में नहीं होगा। अतः उन्होंने हिंदुओं और मुस्लमानों को सांप्रदायिक आधार पर आपस में लड़वाने के कार्य किये।

सन् 1906 में भारत में मुस्लिम लीग के गठन ने हिन्दू और मुस्लमानों के मध्य एकता एंव सौहार्द के संबधों को और अधिक बिगाड़ने का कार्य किया। सन् 1905 में बंगाल विभाजन के उपरांत मुस्लमानों में सांप्रदायिक आधार पर चुनावों में प्रतिनिधित्व की मांग उठी जिसका उस समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड मिंटों ने समर्थन किया और कहा कि आप यह ठीक कहते है कि आपकी स्थिति सिर्फ मुस्लमानों की संख्या के आधार पर नहीं आंकी जानी चाहिए, बल्कि इसका आंकलन इस आधार पर होना चाहिए कि आपको कितना राजनीतिक महत्व प्राप्त है। जून, 1909 में मार्ले मिंटो सुधार अधिनियम भारत में पारित किया गया जिसमें सांप्रदायिक आधार पर मुस्लमानों के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली का प्रावधान किया गया जिसके परिणाम स्वरुप हिन्दुओं और मुस्लमानों के मध्य सांप्रदायिकता रुपी खाई और अधिक गहरी होती चली गयी।

अंग्रेजी शासन के दौरान नौकरशाही के आधार पर भी हिन्दुओं और मुस्लमानों को परस्पर बाँटने का कार्य किया गया। ब्रिटिश काल में शिक्षा के आधार पर विभिन्न विभागों में नियुक्तियां की गयी, जिसमें उच्च शिक्षा प्राप्त हिंदुओं को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया, जबकि शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा होने के कारण मुस्लिम समुदाय के लोग इससे वंचित रह गये। हिंदू समुदाय के लोग आर्थिक रुप से सशक्त होने लगे तथा मुस्लिम समुदाय आर्थिक एवं प्रशासनिक तौर पर पिछडने लगा, परिणाम स्वरुप मुस्लिम समुदाय के मन में हिंदुओं के प्रति घृणा एवं द्वेष की भावना ने जन्म लिया। एक और जहाँ उच्च पदों पर हिंदुओं की नियुक्तियाँ की गयी तो वही अंग्रेजी हकुमत ने बड़ी ही चतुरायी के साथ पुलिस प्रशासन में मुस्लमानों को अधिक संख्या में नियुक्त किया ताकि हिन्दुओं के द्वारा अगर कोई आंदोलन किया जाये तो पुलिस व्यवस्था में नियुक्त मुस्लिम कर्मचारियों के द्वारा उसे कड़ाई के साथ कुचला जा सके और इस प्रकार हिंदुओं और मुस्लमानों में परस्पर और अधिक कटुता और वैमन्स्य की भावना को बढ़ावा देने में अंग्रेजो द्वारा अपनी बुद्धि का प्रयोग किया गया।

साइमन कमीशन की रिपोर्ट सन् 1930 में प्रकाशित हुयी, जिसमें सन् 1919 मोटेम्यू–चैम्सफोर्ड अधिनियम की भॉति ही सांप्रदायिकता के आधार पर हिंदू एंव मुस्लमानो के लिए केन्द्रिय सभा एवं प्रांतीय विधायिकाओं में पृथक–पृथक आरक्षण की व्यवस्था की गयी तथा भारत में भविष्य में निम्न सदन जिसे लोकसभा का नाम दिया गया में कुल 250 सीटो में से 150 हिंदुओं और 100 सीटे मुस्लमानो को दी गयी तथा इसी को आधार बना सन् 1930 में हुये मुस्लिम लीग के सालाना सम्मेंलन में तात्कालिन मुस्लिम लीग के अध्यक्ष ने पृथक राष्ट्र के निर्माण का नारा बुलंद किया।

देश का विभाजन होने से पूर्व ही भारत के अनेको प्रांतो जिनमें पजांब, बंगाल, बिहार एवं मुंबई में सांप्रदायिक दंगो की लहर उमड़ उठी, जिसमें हजारों लाखों लोग मारे गये। ये अंग्रेजों की ही चाल थी, कि वो भारत का विभाजन शांति पूर्ण ढंग से नहीं कराना चाहते थे। अंततः 18 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा एक अधिनियम पारित कर भारत का दो देशों में विभाजन कर दिया गया। यह विभाजन ब्रिटिश हकुमत के द्वारा हिंदू एवं मुस्लमानो के मध्य घृणा, संकीर्णता, एवं सांप्रदायिकता के जो बीज बोये गये थे, उनका परिणाम था। भारत ब्रिटिश हकुमत से तो मुक्त हो गया था, किंतु अंग्रेजी शासन व्यवस्था में हिंदू एवं मुस्लमानों के मध्य जो आपसी द्वेष और घृणा की भावना का निर्माण किया गया था, उसका अंत ना हो सका। उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण करने के उपरांत तो यह कहा जायेगा कि सांप्रदायिकता एक आधुनिक अवधारणा है, तथा यह भारत में ब्रिटिश शासन व्यवस्था की देन है।

स्वतंत्र भारत

अंग्रेजो की विभाजनकारी नीति के परिणाम स्वरुप 15 अगस्त 1947 को देश तो स्वतंत्र हो गया लेकिन ब्रिटिश काल में भारतीय समाज में रोपित कि गयी सांप्रदायिकता की समस्या स्वतंत्र भारत में भी जस–की–तस बनी रही, बल्कि वह स्वतंत्र भारत में नये परिप्रेक्ष्य और नये आयामों के साथ उभर कर सामने आयी। विभाजन के उपरांत दोनों ही देशों में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा हेतु कोई ठोस इंतजाम नहीं किये थे, परिणाम स्वरुप सांप्रदायिक आधार पर जमकर मार–काट हुयी तथा इन नरसंहारो में लाखों लोगों की जान गयी। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदू एंव मुस्लमानों के मध्य घृणा का सांप्रदायिकता रुपी कैंसर समाज में फैलता ही चला गया। सन् 1951 में भारत में जहाँ धार्मिक आधार पर गठित सांप्रदायिक संगठनों की संख्या 10 से 15 के मध्य थी वह आज संख्या बढ़कर हजारों में हो गयी है तथा इन सांप्रदायिक संगठनो की उग्र विचारधारा से प्रभावित हो इनसें जुड़ने वाले लोगों की संख्या आज करोड़ों में है। जब करोड़ों लोग इन सांप्रदायिक संगठनो से जुड़े रहेगे तो उसके परिणाम निश्चित ही भयावय होगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सांप्रदायिकता की समस्या धीरे–धीरे भारत के हर क्षेत्र में देखने को सामने आने लगी। सन् 1962 की जबलपुर सांप्रदायिक हिंसा ने भारत की धर्मनिरप्रेक्षता एवं बहुलता में एकता की छवि को गहरा नुकसान पहुँचाया। 1962 का सांप्रदायिकता दंगा स्वतंत्रता उपरांत पहला बड़ा सांप्रदायिक दंगा था। इसके कुछ वर्षो के उपरांत सन् 1969 में सांप्रदायिक दंगा हुआ। उक्त दंगे की शुरुआत मुस्मलमानों के द्वारा हिंदू मंदिर पर आक्रमण कर साधु संतों की हत्या की गयी। अहमदाबाद की इस

सांप्रदायिक हिंसा में 660 लोगो की जान गयी जिनमें 430 मुस्लमान एवं 230 हिंदू थे। गैर आधिकारिक आंकड़ो के अनुसार मृतको की संख्या 660 से कहीं अधिक थी।

सत्तर का दशक आते–आते सांप्रदायिक दंगों की घटनाओं में अप्रत्याशित रुप से बढ़ोत्तरी हुयी। ''वर्ष 1972 में जहाँ भारत में 24 दंगे हुये तो वर्ष 1973 में दंगों की संख्या बढ़कर 242 हो गयी। इसके उपरांत आगे के वर्षों में क्रमशः 1974 में 248 दंगे, 1975 में 205 दंगे, 1976 में 169 दंगे, 1977 में 188 दंगे तथा 1978 में 219 सांप्रदायिक दंगे घटित हुये।'' भारत में दंगो की ये क्रमबद्धता दर्शाती है कि ब्रिटिश काल में भारत में जो सांप्रदायिकता रुपी विष बेल का बीजारोपण किया गया था वो स्वतंत्र भारत में दिन–प्रतिदिन फल–फूल रही थी।

अस्सी का दशक आते–आते साप्रंदायिक दंगो का स्वरुप ही परिवर्तित हो गया था। जहाँ पहले अधिकांश दंगे धार्मिक आधार पर घटित होते थे, वहीं अस्सी के दशक में सांप्रदायिक राजनीति का बोल–बाला रहा। इस दशक में अनेको सांप्रदायिक सगंठनों का प्रादुर्भाव हुआ। इस काल में अनेको हिन्दु एवं मुस्लिम धार्मिक सांप्रदायिक संगठनों जैसे– विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सिमी जमात–ए–इस्लामी जीमयत उलेमा–ए–हिंद ने नौजवानों में धार्मिक कट्टरता का बीजारोपण किया। इन संगठनों के द्वारा परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध सांप्रदायिक भावनाओं को निर्मित करने का कार्य किया गया जिसने समय–समय पर सांप्रदायिक दंगों के रुप में समाज को खण्डित किया। अस्सी के दशक के प्रमुख दंगों की बात की जाये तो उनमें 1980 का मुरादाबाद दंगा, 1984 का सिख दंगा, 1984 का दिल्ली दंगा, 1987 का मेंरठ दंगा, 1988 का मुज्जफरनगर दंगा, 1989 का भागलपुर दंगा, 1989 का ही वाराणसी दंगा प्रमुख है। उक्त दंगों में हजारों लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी।

नब्बे के दशक की शुरुआत में बाबरी विध्वंस ने हिंदुओ और मुस्लमानों के मध्य परस्पर घृणा और द्वेष की खाई को और अधिक गहरा कर दिया। बाबरी विध्वंस के उपरांत भारत के अनेकों शहरों में भीषण सांप्रदायिक दंगे हुये जिनमें हजारों लोगों की जान गयी। दंगो का यह अनवरत क्रम यू ही जारी रहा तथा सन् 1993 में बाबरी विध्वंस के प्रतिशोध हेतु मुंबई में जगह–जगह पर अनेको बम विस्फोट किये गये जिनमें सैकड़ों नागरिको की जान गयी। वर्ष 2002 का गुजरात दंगा कौन भूल सकता है जिसमें अयोध्या से रेल के द्वारा लौट रहे कार सेवकों को गोधरा रेलवे स्टेशन पर पहुँचते ही मुस्लिम दंगाईयों के द्वारा उनके डिब्बे में आग लगा कर जिंदा जला दिया गया था। इस घटना के परिणाम स्वरुप संपूर्ण गुजरात में अनेको जगह पर सांप्रदायिक हिंसायें हुयी जिनमें हजारों की संख्या में लोगों की मृत्यु हुयी। वर्ष 2006 में अलीगढ़ दंगे, वर्ष 2010 में पश्चिम बंगाल के देयगंगा शहर का सांप्रदायिक दंगा ये कुछ ऐसे दंगे हुये जिनमें मानवता तार–तार हुयी।

वर्तमान आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सांप्रदायिकता का प्रयोग राजनीतिज्ञयों द्वारा सत्ता प्राप्त करने के एक हथियार के रुप में किया जाने लगा है। आज सांप्रदायिकता के पीछे का मूल कारण धर्म नहीं रह गया है। वरन् कुत्सित राजनीति इसके लिए मुख्य रुप से जिम्मेंवार है। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों की 'फूट डालों और राज करो' की नीति ने जहाँ उस वक्त सम्पूर्ण भारत को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का कार्य किया था यही क्रम स्वतंत्रता उपरांत भारत में बदस्तूर जारी रहा।

भारत में सांप्रदायिकता के उद्भव के कारण

सांप्रदायिकता एक ऐसी ज्वलंत समस्या है जिससे भारत पिछले सकैड़ों वर्षों से जुझ रहा है। सांप्रदायिकता के उद्भव के कारणों की बात की जाए तो उसके अनेक कारण और अनेक आयाम है। मुख्यतः अगर इसके उद्भव की बात की जाए तो उसमें सामजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना प्रमुखतम है। यहाँ पर हम कुछ ऐसे ही प्रमुख कारणों को उल्ललेख करेंगे जो सांप्रदायिकता को बढ़ाने में अपनी प्रमुख भूमिका निर्वाह करते है।

वैचारिक कारण

मानव को इस धरा पर अन्य प्राणियो की तुलना में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि उसके पास दूसरे प्राणियों की तुलना में सोचने तथा समझने की क्षमता है और अपनी इस विशेष योग्यता के आधार पर आज मानव ने विकास के नये कीर्तिमान स्थापित किये है। लेकिन जब कभी मनुष्य की सोच दूषित होती है तो इसके परिणाम एकदम विरत होते है। सांप्रदायिकता इन्हीं दूषित विचारों का ही परिणाम है। मनुष्य के विचारों पर सर्वाधिक प्रभाव उसका पड़ता है जिस परिवेश में वो रहता है चाहे वो परिवार हो, मित्र हो, स्कूल–कॉलिज हो। वर्तमान समय में, टी०वी०, रेडियों, पुस्तकें, धार्मिक साहित्य भी मनुष्य के विचारों को बनाने और सवारने में अपनी भूमिका निर्वाह करते है। इन्हीं के परिणाम स्वरूप मनुष्य के मन में अपने धर्म, संप्रदाय के प्रति प्रेम और अन्य धर्मो के प्रति घृणा–द्वेष की विचारधारा का विकास होता है और यही से सर्वप्रथम प्रत्यक्ष और अत्यक्षं रूप से सांप्रदायिकता की भावना का उद्भव होता है जों मनुष्य की मानसिकता को विकृत कर देती है और उसके व्यक्तित्व का अंग बन जाती है। जिस प्रकार शिक्षा, परिवेश और जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों से मानव के अन्दर समृद्ध विचारों का उद्भव होता है उसी प्रकार सांप्रदायिकता रुपी विचारधारा भी एक बीज के रूप में अंकुरित होती है और समाज के साथ–साथ पल्लवित होती जाती है।

आज समाज में जहाँ कुछ लोगो ने अपने सद्विचारो से मानव जीवन को एक आयाम दिया है वही दूसरी और कुछ ऐसे भी लोग है जिन्होने अपने विचारो से समाज में प्रेम और सौहार्द के वातावरण में सांप्रदायिकता रूपी विष घोला है। हमें यहाँ पर उन विचारो की अध्ययन करने की आवश्यकता है जिसने सांप्रदायिकता रूपी दानव को खडा करने में अपना योगदान दिया है। हमें उन कारणों को

ढूंढना होगा तथा जरूरी उपाय भी खोजने होंगे, जिससे समाज में प्रेम और समरसता का माहौल बनाया जा सके।

सामाजिक कारण

भारतीय समाज विश्व में प्राचीनतम समाज में से एक है। इस प्राचीनतम समाज की प्रमुख विशेषता विविधता में एकता रही है। यहाँ विभिन्न धर्मो, जातियों के लोग एक साथ निवास करते है जिनके रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन, भाषा इत्यादि में विविधता देखने को मिलती है। समाज ही है जो व्यक्ति का निर्माण करता है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका विकास समाज के अंदर रहकर ही संभव है। किंतु जब हम सांप्रदायिकता के उद्भव के विषय में समाज को देखते है तो पाते है कि प्राचीन भारत के गर्भ में उस समय की सामाजिक व्यवस्था ने सांप्रदायिकता के बीज का बीजारोपण किया।

प्राचीन भारतीय समाज चार वर्ण व्यवस्था में विभाजित था। जिसके कारण निम्न वर्णो में असंतोष की भावना थी। ऊंच–नीच, भेद–भाव, छुआ–छूत रूपी दुर्भावना समाज में बहुत गहराई तक जमी हुयी थी। वर्तमान समय में ये विषमतामूलक वर्ण वयवस्था तो दिखाई नहीं देती किंतु उसकी जगह समाज में आज आरक्षण रूपी व्यवस्था का सूत्रपात हुआ है जिसने मनुष्यों को भिन्न–भिन्न आरक्षित श्रेणियों में बांट दिया है और परस्पर असमानता के भाव का बीजारोपण किया है।

धार्मिक कारण

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ प्राचीन समय से ही धर्म ने समाज में एक पथ–प्रदर्शक की भूमिका निर्वाह की है। लेकिन कालांतर में धर्म का अर्थ रूढ़ एवं संकीर्ण हो गया है। आज धर्म के आधार पर लोगों को छोटे–बड़े वर्गो में बांटने का कार्य किया जा रहा है। धर्म जहाँ व्यापक और विस्तृत विचारधारा को मान्यता देता है वही संप्रदाय सीमित और खंडित विचारधारा को।

वर्तमान समय में धर्म के नाम पर लोगों की भावनाओं को भड़का कर सांप्रदायिकता को फैलाया जा रहा है। कुछ मुट्ठी भर लोग धर्म के ठेकेदार बन अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्म का उपयोग ऐसे अनैतिक और गलत रूप से करते है कि धर्म की आत्मा कराहती नजर आती है। धर्म भारतीयों के मूल में है और जब–जब धर्म की हानि हुई है तब–तब हिंसा हुई है। सांप्रदायिकता धर्म को आधार बनाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचती है चूंकि भारतीय लोग सर्वाधिक अगर किसी बात पर उत्तेजित–आवेशित होते है वह मुद्दा धर्म का ही होता है। सांप्रदायिकता इसी चीज को अपने हथियार के रूप में प्रयोग करती है। सांप्रदायिकता विकृत मानसिकता का परिणाम है और इसी विकृत मानसिकता से प्रभावित कुछ लोग धर्म और संस्कृति के नाम पर समाज में विष घोलने का कार्य करते है।

आज खंडित होती धार्मिकता का ही परिणाम है कि हिन्दुओं और मुस्लिम समुदाय में परस्पर अलगाव की भावना एक दूसरे के हृदय में विराजमान है। हिन्दू समुदाय, मुस्लिम समुदाय से सर्वथा अलग है इसी सोच ने आज लोगों को बांटने का कार्य किया है और इसी सोच के फलस्वरूप अगर काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय है तो अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय। 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' अगर अस्तित्व में आया तो 'मुस्लिम खाकसार' भी अस्तित्व में आया। विद्यार्थी परिषद की स्थापना हुई तो दूसरी तरफ 'सिमी' का निमार्ण हुआ। जहाँ एक और महाराष्ट्र में बाल ठाकरे के द्वारा 'शिव–सेना' पार्टी का निर्माण किया गया वहीं दूसरी ओर अब्दुल बुखारी द्वारा 'आदम सेना' बनायी गयी, हिन्दुओं द्वारा 'पाँच जन्य' समाचार पत्र निकाला गया तो दूसरी ओर जमाअत ने 'क्रांती' का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस तरह के अन्य बहुत से उदाहरण है जो हिन्दुओं और मुस्लमानों के परस्पर अलगाव की स्थापना करते है।

अंत में हम यही कह सकते है कि सांप्रदायिकता स्वयं को स्थापित करने के लिए धर्म का आसरा लेती है और ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य रूपी ऐसी जमीन तैयार करती है, जिस पर सांप्रदायिकता रूपी पौधें का विकास हो सकें।

राजनीतिक कारण

राजनीति शब्द का निर्माण दो शब्दो से मिलकर हुआ हैं राज और नीति। राज मतलब शासन एवं नीति मतलब उचित योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की कला अर्थात राज्य को कुशल ढंग से संचालित कर विशिष्ठि उद्देश्यों/लक्ष्यों की प्राप्ति ही राजनीति कहलाती है। राजनीति वो माध्यम है जिसमें राज्य का सर्वागिण विकास सभंव हो पाता है यह समाज का सामाजिक और आर्थिक दोनों रूप में विकास करती है लेकिन आज राजनीति अपने राजनीतिक धर्म का पालन करने में विफल हो रही है। राजनीति अब सत्ता या अधिकारों को धारण करने की एक उपाधि मात्र रह गयी है। आज राजनीतिज्ञ धर्म की आड़ में समाज में विभिन्न धर्मो के मध्य भेद–भाव की भावना उत्पन्न करते है, सत्ता की लालसा में वो जनता को भाषा, जाति, धर्म के आधार पर सांप्रदायिकता की अग्नि में झोंक रहे है तथा भारतीय जनता को आपस में बांटने के लिए एक खतरनाक दीवार का निर्माण कर रहे है।

पंजाब में खालिस्तान आंदोलन, जम्मू कश्मीर में आतंकवाद, तमिलनाडू में हिन्दी विरोध, नब्बे के दशक में अयोध्या का राम जन्म भूमि विवाद और गुजरात दंगे हमारे देश के राजनीतिज्ञों की स्वार्थ जनित नीतियों का ही परिणाम है। अंग्रेजों ने भारत में 'फूट डालो और राज करो' की जो नीति अपनायी थी वर्तमान समय में भी कुछ राजनीतिक पार्टियाँ उसी तरह की नीतियों के माध्यम से लोगों को परस्पर आपस में बांटकर सत्ता पर काबिज होना चाहती है। लोकतंत्र में वोट रूपी शक्ति ही राजनीति दलों के लिए सत्ता की सीढ़ी है और प्रत्येक राजनीतिक दल इस सीढ़ी को मजबूत बनाने अर्थात अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहता है। इसमें कोई गलत बात नहीं है, क्योंकि वोट के आकर्षण के परिणामस्वरूप ही लोकतंत्रीय प्रणाली के अंतर्गत विश्व में अनेक अच्छे कार्य भी हुये है जैसे– स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार, अश्वेतो को बराबरी

का अधिकार, कारखाना मजदूरों की स्थिति में सुधार इत्यादि। लेकिन आज राजनीति अपने निजी स्वार्थ में अंधी हो धर्म के आगे नतमस्तक हो रही है और राजनीतिज्ञ मंदिरों एवं मस्जिदों के नाम पर राजनीति कर रहे है। वो धार्मिक स्थलों का सहारा ले अपने वोट बैंक को बढ़ाना चाहते है एवं धर्म के आधार पर लोगों को उकसाते है और दूसरे धर्म के प्रति नफ़रत और घृणा की भावना फैलाते है। आज राजनीतिक दल चुनावों के वक्त सांप्रदायिकता रूपी शस्त्र का सहारा लेते है और उसके माध्यम से सत्ता पर काबिज़ होने की चाह रखते है।

आर्थिक कारण

आर्थिक विपन्नता किसी भी राष्ट्र की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा होती है। आर्थिक विपन्नता ही है, जो लोगों को राष्ट्र विरोधी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। भारत में आर्थिक समानता के आधार पर अनेकों बार सांप्रदायिक धटनाएँ घटित हुयी है। सांप्रदायिकता के संदर्भ में आर्थिक कारणों की अनदेखा नहीं किया जा सकता है। अंग्रेजी शासकों की उपनिवेशवादी नीतियों ने आर्थिक आधार पर भारतीय समाज को बांटने का कार्य किया। मूलतः सांप्रदायिकता उपनिवेशवाद के दुष्परिणामों में से ही एक है और इसके साथ ही साथ सांप्रदायिकता वर्तमान दौर में समाज और अर्थव्यवस्था को पूंजीवाद द्वारा सही ढंग से विकसित न कर पाने का परिणाम है।

औपनिविश्क काल में हुये आर्थिक बदलवाओं से निर्मित सांप्रदायिकता वर्तमान दौर में भी जस की तस है। आज भी भारतीय समाज में आर्थिक संपन्नता के स्तर की दृष्टि से विभिन्न संप्रदायों में विषमता है। विकास की प्रक्रिया में कुछ संप्रदाय आगे बढ़ गये तो कुछ इस दौड़ में पीछे रह गये। भारत की आधे से ज्यादा आबादी गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन गुजर बसर कर रही है। गरीब किसी भी सामाजिक ढांचे के असंतुलन और चारित्रिक दोष का सबसे बड़ा कारक है और दंगे की चिंगारी के उत्प्रेरक का तत्व। राजनितिज्ञों ने इसी आर्थिक विषमता की गुत्थी का फायदा उठाया तथा वोट बैंक की राजनीति कर लोगों के मध्य परस्पर दंगे कराने का कार्य किया है। आर्थिक आधार पर उत्पन्न सांप्रदायिक घटनाओं का मुकाबला करने के लिए आज विकास रुपी हथियार की आवश्यकता है। लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में आर्थिक सुधारों को आज एक मजबूत आधार देना होगा तथा एक स्पष्ट और व्यापक राजनीतिक सहमती बनानी होगी।

निष्कर्ष

अंततः निष्कर्ष स्वरुप हम यही कह सकते है कि सांप्रदायिकता मानव जाति के लिए एक अभिशाप है। भारत जैसे देश में जहाँ विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते है वहाँ सांप्रदायिकता रुपी इस समस्या ने लोगों के मध्य विष घोलने का कार्य किया है। इसने कभी धर्म, कभी जाति, कभी भाषा एवं क्षेत्रवाद के आधार पर विभिन्न संप्रदायों को आपस में बांटने का कार्य किया है। यह आर्थिक, सामजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कारणों से प्रभावित हो समाज के अंदर विघटन की स्थिति का निर्माण करती है परिणाम स्वरुप एक धर्म संप्रदाय के कुछ कट्टरपंथी अपने धर्म के समक्ष अन्य संप्रदाय के धर्म को हेय की दृष्टि से देखते है और अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने में वो किसी अनैतिक कृत्य को करने से नहीं पीछे हटते जिससे लोगों के मन में सांप्रदायिक चेतना का विकास होता है। जो उन्हें रक्तपात और विद्धवंस के मार्ग पर ढकेल देती है। ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्रीय भावनाओं की आहुति तो चढ़ती ही है साथ ही साथ समाज को जन–धन की हानि भी उठानी पड़ती है। आज सांप्रदायिकता के रोग ने बहुत व्यापक रुप धारण कर लिया है। राष्ट्र के अन्दर विराजमान कुछ संर्कीण विचारधारा वाले तत्वों द्वारा धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को परिवर्तित करने का नियोजित प्रयास किया जा रहा है। अब सांप्रदायिकता मात्र विघटनकारी रूझान भर नहीं है यह समाज में व्याप्त तनावों की विकृत अभिव्यक्ति बन गयी है।

REFERENCES

खानकाही निश्तर, अग्रवाल डा० गिरिराजशरण (1995) दंगेः क्यों और कैसे, बिजनौर, हिन्दी साहित्य निकेतन.

इंजीनियर असगर अली (1989) ''कम्यूनलिजम एण्ड कम्यूनल वायलेंस इन इण्डियाः एनालिटिकल एप्रोच ऑफ हिंदु–मुस्लिम कनफलिक्ट, दिल्ली, अजंता पब्लिकेशन

इंजीनियर असगर अली (2012) ''धर्म और सांप्रदायिकता''' नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

कपूर मस्तराम, (1993) ''सांप्रदायिक दंगो का समाज शास्त्र'', दिल्ली, लेखक मंच मयूर विहार

कुमार मुकेश (2014) ''कसौटी पर मीडिया'' नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

कुमार सर्वेश (2008) ''धर्म एवं सांप्रदायिकता :– एक आलोचनात्मक अध्ययन (हिन्दू एवं इस्लाम के विशेष संदर्भ में) छत्रपति शाहु जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

कुमार डॉ0 किशोर (2012) ''भारत में सांप्रदायिकता'' हापुड़, अहमद पब्लिकेशन

कुमार अरुण (2003) ''भारत में सांप्रदायिकता का दौर, नई दिल्ली, प्रिया साहित्य सदन

कुमार अजय (2009) ''भारत में हिन्दू मुस्लिम सांप्रदायिकता का स्वरुप और दृष्टिकोणःअंग्रेजी राज्य का प्रोत्साहन और प्रभाव सन् (1800–1909)'' चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय मेंरठ

ओझा, डी०डी० सत्यप्रकाश (2001) ''दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी''दिल्ली,ज्ञान गंगा प्रकाशन